रियाजः गुरू द्वारा प्रवर्तित मार्ग

डॉ गौरी खन्ना

रियाज़ में संगीतज्ञ की एकाग्रता का बहुत महत्व है। यह एकाग्रता एकान्त में स्वयं को पूर्णरूप से संगीत के प्रति समर्पित करके ही प्राप्त की जा सकती है। अतः रियाज एकाग्र मन से एकान्त में करना ही श्रेष्ठ होता है।

गुरु–शिष्य परम्परा का सर्वोत्कृष्ट दर्पण हमें 'घराना पद्धति' से दृष्टिगोचर होता हैं। घरानों में गुरुओं द्वारा शिष्यों को प्रदान किए जाने वाले शिक्षण के फलस्वरूप जो गायकी अभीनीत होती थी, वह आज भी हमारे लिए एक मिसाल बनी हुईं है और आगे भी बनी रहेगी। संगीत कला को श्रेष्ठता के पद तक पहुँचाने में सभी घराने के कलाकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। घराने की गायकी का स्वरूप साधकों द्वारा सम्मिश्रित एवं परिवर्द्धित हैं।